हज्ज करने से पहले !

[हिन्दी – Hindi – هندي]

अब्दुह क़ाइद अज़-ज़रीबी

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1434

IslamHouse.com

قبل أن تحج !

« باللغة الهندية »

عبده قايد الذريبي

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

हज्ज करने से पहले!

आदरणीय हाजी भाई ! – *अल्लाह तआला हमें और आपको अपनी प्रसन्नता की चीज़ों की तौफीक़ प्रदान करे और हमें और आपको अपने क्रोध की चीज़ों से दूर रखे* – आप इस बात को अच्छी तरह जान लें कि आपके लिए हज्ज करने से पहले कुछ शिष्टाचार से सुसज्जित होना अनिवार्य है, उनमें से कुछ यह हैं :

सर्व प्रथम : हज्ज करने का तरीक़ा, उसकी शर्तें, उसके अरकान, उसके वाजिबात, उसकी मौखिक और व्यवहारिक सुन्नतें, और उसकी निषेद्ध चीज़ों का ज्ञान हासिल करना, शैख इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह ने फरमाया : कितना बेहतर होगा अगर हाजी हज्ज करने से पहले हज्ज के अहकाम सीख ले; ताकि वह समझबूझ और ज्ञान के साथ अल्लाह की इबादत करे, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण कर सके। जबकि आप देखें गे कि यदि कोई व्यक्ति किसी देश का सफर करना चाहता है तो उसके रास्ते के बारे में पता करता है ताकि वह मार्गदर्शन के आधार पर वहाँ पहुँच सके, तो फिर उस आदमी का क्या हाल होना चाहिए जो ऐसे रास्ते पर चलने का इरादा रखता है जो अल्लाह तआला की ओर और उसकी

जन्नत की तरफ ले जाने वाला है?! क्या उसके लिए शोभित नहीं कि वह उसके बारे में, उस पर चलने से पहले, पता कर ले ताकि वह लक्ष्य तक पहुँच सके?!''

दूसरा : तौबा की सभी शर्तों को पूरी करते हुए अल्लाह से सच्ची तौबा करें, उन्हीं में से आप ने जो गुनाह और अवज्ञाएं की हैं उन पर पश्चाताप करना, भविष्य में उनकी तरफ न लौटने का संकल्प करना है, तथा आप हुक़ूक़ को भी उनके हक़दारों को लौटा दें और उनके मालिकों से सफाई (भार मुक्ति) हासिल कर लें, अमानतों को वापस कर दें या वापस लौटने तक किसी ईमानदार (भरोसेमंद) को उनका ज़िम्मेदार (वकील) बना दें।

तीसरा : विशेष रूप से अपने माता पिता, अपने परिवार, अपने बच्चों और अपने सभी साथियों से क्षमा और माफी मांग लें, अपनी यात्रा से पहले अपनी वसीयत लिख लें ; क्योंकि आप नहीं जानते कि अल्लाह आप के ऊपर क्या मुक़ददर करता है। तथा उसमें इस बात को स्पष्ट कर दें कि क्या आपके लिए और क्या आपके ऊपर है और उस पर गवाह रख लें।

चौथा : आप अपने बीवी, बच्चों के लिए जिनके खर्च के आप ज़िम्मेदार हैं अपनी अनुपस्थिति की अवधि के दौरान उनकी

ज़रूरत की चीज़ें मुहैया कर दें, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : ''आदमी के गुनाह के लिए इतना काफी है कि वह जिनकी रोज़ी का ज़िम्मेदार है उनकी परवाह न करे।''[1]

पांचवाँ : आप इस बात के अभिलाषी बनें कि आपका तोशा (मार्ग व्यय) हलाल हो और आपका माल पवित्र हो; क्योंकि ''अल्लाह तआला पवित्र है और पवित्र चीज़ को ही क़बूल करता है।''[2]

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया : ''सबसे अच्छा हाजी वह है जिसकी नीयत सबसे ज़्यादा खालिस (विशुद्ध) हो, उसका खर्च सबसे अधिक पवित्र हो और वह विश्वास (यक़ीन) में सबसे अच्छा हो।''[3]

यदि आपका हज्ज हराम धन से है, तो उस हज्ज से आपका हिस्सा केवल कष्ट और थकान है, किसी ने इस बारे में कविता कही है :

---

[1] अबू दाऊद, हदीस संख्या : 1692.

[2] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 1015.

[3] एहयाओ उलूमिददीन 1/262.

यदि आप ने ऐसे माल से हज्ज किया जो दरअसल हराम है, तो वास्तव में आप ने हज्ज नहीं किया बल्कि कारवां (यानी वह चौपाया –सवारी– जिस पर हाजी हज्ज कर रहा है) ने हज्ज किया। अल्लाह तआला हर पवित्र चीज़ को ही स्वीकार करता है। अल्लाह के घर का हज्ज करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का हज्ज मबरूर (स्वीकृत) नहीं होता है।

तथा एक दूसरे का कहना है :

लोग उस धन के द्वारा अल्लाह के प्राचीन घर का हज्ज करते हैं जिसे वे हराम तरीक़े से एकत्र करते हैं। तथा उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यह भ्रह रखता है कि उसका पाप मिटा दिया जाएगा, लेकिन वह जहन्नम में उसके ऊपर होगा।

तथा स्थायी समिति के विद्वानों से प्रश्न किया गया कि :

उस व्यक्ति के हज्ज का क्या हुक्म है जिसने हराम माल – अर्थात नशीली चीज़ों की बिक्री से प्राप्त लाभ – से हज्ज किया, फिर वे अपने माता पिता के लिए हज्ज के टिकट भेजते हैं, जबकि उनमें से कुछ को पता होता है कि वे धन नशली चीज़ों के व्यापार से एकत्र किए गए हैं। क्या यह हज्ज मक़बूल है या नहीं?''

तो उन्हों ने उत्तर दिया : हराम धन से हज्ज का होना, हज्ज के सही होने में रूकावट नहीं है, परंतु हराम कमाई की वजह से पाप मिलेगा, और यह उसके हज्ज के अज्र व सवाब को कम कर देगा, उसे बातिल (व्यर्थ) नहीं करेगा।''[1]

छठा : आप नेक लोगों की संगति अपनाने के अभिलाषी बनें, जो आपको भूल जाने पर याद दिलाएं, जानकारी न होने पर आपको सिखाएं, आपके असमर्थ होने पर आप का सहयोग करें, आपके आलसी और खिन्न होने पर आप को आज्ञाकारिता पर प्रोत्साहित करें। इब्ने जमाअह ने अपने ''मनसक'' में फरमाया : उसे चाहिए कि अपने साथिया के साथ अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन करे, और बिना हानि में पड़े हुए उनके लिए भरपूर प्रयास करे, विशेषकर प्यासे लोगों को पानी मुहैया करना।''

सातवाँ : अल्लाह के लिए नीयत व इरादा को खालिस करना और उसे एकमात्र उसी के लिए विशिष्ट करना, अल्लाह तआला ने इसका आदेश दिया है, अल्लाह ने फरमाया :

﴿وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ﴾ [البقرة: ١٩٦].

[1] फतावा स्थायी समिति 11/43.

''और अल्लाह के लिए हज्ज और उम्रा को पूरा करो।'' (सूरतुल कह़रा : 196).

अल्लामा सअदी रहिमहुल्लाह ने फरमाया : ''इस आयत के अंदर उन दोनों – अर्थात् हज्ज व उम्रा – को अल्लाह तआला के लिए विशुद्ध करने का आदेश दिया गया है।''[1]

तथा अल्लाह ने आपके लिए धर्मसंगत करार दिया है कि आप यह तल्बिया पढ़ें :

لَبَّيْكَ اَللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لاَ شَرِيْكَ لَكَ.

उच्चारण : लब्बैका, अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैका ला शरीका लका लब्बैक, इन्नल हम्दा वन्नेमता लका वल मुल्क, ला शरीका लक।[2]

तथा आप ऐसी चीज़ों से बचें जो हज्ज के सवाब में कमी कर देती हैं आर उसमें खराबी पैदा कर देती हैं, जैसे दिखावा, रियाकारी और शोहरत। बल्कि जब आप हज्ज का तल्बिया

[1] तैसीरूल करीमिर्रहमान फी तफसीर कलामिल मन्नान, पृष्ठ : 90.

[2] सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 1475, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 1218, जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से.

पुकारें तो अल्लाह से वही दुआ करें जो दुआ आपके इमाम पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने की थी, आप ने फरमाया :

((اللّٰهُمَّ حجة لا رياء فيها ولا سمعة))

''अल्लाह हुम्मा हज्जतन ला रियाआ फीहा वला सुमअह'' ऐ अल्लाह मैं ऐसे हज्ज का इच्छुक हूँ जिसमें न दिखावा हो न शोहरत की चाहत।''[1]

हज्ज में इख़्लास का होना बहुत दुर्लभ है, चुनाँचे वर्णन किया जाता है कि एक आदमी ने इब्ने उमर –रज़ियल्लाहु अन्हुमा – से कहा : ''हज्ज करने वालों की संख्या कितनी अधिक है।'' तो इब्ने उमर ने कहा : ''उनकी संख्या कितनी कम है!'' फिर उन्हों ने एक आदमी को एक ऊँट पर एक पुराने कजावे पर देखा जिसकी नकील रस्सी की थी, तो कहा : ''शायद यह हो''। तथा शुरैह कहते हैं : ''हज्ज करने वाले कम हैं, और सवारों की संख्या अधिक है, भलाई करने वालों की संख्या कितनी अधिक

[1] इसे इब्ने माजा (हदीस संख्या : 2890) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सहीहुत तरगीब (हदीस संख्या : 1122) में सहीह कहा है।

है, परंतु जो लोग अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हैं उनकी संख्या बहुत कम है!''[1]

आठवाँ : इस बात के अभिलाषी बनें कि आपका हज्ज उसी तरह हो जिस तरह आपके पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्ज किया, और वह इस तरह कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उनके सभी कामों, कथनों और स्थितियों में अनुसरण करें, जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : ''तुम मुझसे अपने हज्ज के काम सीख लो; क्योंकि मुझे पता नहीं शायद मैं अपने इस हज्ज के बाद फिर हज्ज न कर सकूँ।''[2]

गोया आप हर हाजी से यह कह रहे हैं : मेरा अनुसरण करो; मीक़ात से उसी तरह एहराम बाँधों जिस तरह मैं ने एहराम बाँधा है, उसी तरह तल्बिया कहो जैसे मैं ने तल्बिया पढ़ी, खाना काबा का उसी तरह तवाफ करो जिस तरह मैं ने तवाफ किया है, और अरफात में उसी तरह ठहरो जिस तरह मैं ठहरा हूँ। इसी तरह हज्ज के सभी कामों में करो!

---

[1] लताइफुल मआरिफ पृष्ठ (236)-

[2] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 1297.

यह उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हर चीज़ में अनुसरण करते हैं ; यहाँ तक कि जब वह हज्रे अस्वद के पास आए तो उसे उसी तरह चुंबन किया जिस तरह अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चुंबन किया था, और फरमाया : ''मुझे पता है कि तू एक पत्थर है, न तो तू नुक़सान पहुँचा सकता है और न लाभ दे सकता है, और यदि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तुझे चुंबन करते हुए न देखा होता तो तुझे चुंबन न करता।''[1]

विद्वानों ने उमर रज़ियाल्लाहु अन्हु के इस असर (घटने) से बहुत सी लाभदायक बातें निकाली हैं, उन्हीं में से यह भी है कि : धर्म के मामले में शरीअत के प्रति समर्पण, और जिसके अर्थ (बुद्धिमत्ता) का ज्ञान न हो सके उसमें सुअनुसरण करना। और यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उन चीज़ों में अनुसरण करने में जिन्हें आप ने किया है, एक महान नियम है भले ही उसकी हिकमत (बुद्धिमत्ता) का ज्ञान न हो।''[2]

---

[1] सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 1597.

[2] फत्हुल बारी 3/463.

यह अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं जिन्हों ने हर चीज़ में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण किया और उसी तरह किया जिस तरह आप ने किया था, और जब उन्हों ने हज्रे अस्वद का स्पर्श किया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने पर अपने इस कथन के द्वारा ज़ोर दिया :

''अल्लाहुम्मा, ईमानन बिका, व–तस्दीक़न बि–किताबिका, वत्तिबाअन लि–सुन्नते नबिय्यिका –सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम''

(ऐ अल्लाह! तुझ पर ईमान रखते हुए, तेरी किताब की पुष्टि (स्त्यापन) करते हुए और तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का अनुसरण करते हुए (यह काम कर रहा हूँ).[1]

अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करना ही मोक्ष का रास्ता है, और आपका विरोध करना फित्ना है, चुनाँचे वर्णन किया जाता है कि एक आदमी इमाम मालिक बिन अनस के पास आया और उनसे कहा : ''ऐ अबू अब्दिल्लाह, मैं कहाँ से एहराम बांधूँ? उन्हों ने कहा : जुल–हुलैफा से, जहाँ से अल्लाह

[1] इसे तबरानी ने मोजमुल औसत (5/79) में रिवायत किया है।

के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एहराम बाँधा। उसने कहा : मैं मस्जिद से एहराम बाँधना चाहता हूँ। तो उन्हों ने कहा : ऐसा मत करो। उसने कहा : मैं मस्दिज में क़ब्र के पास से एहराम बाँधना चाहता हूँ। उन्हों ने कहा : तू ऐसा मत कर; क्योंकि मुझे तेरे ऊपर फित्ना का डर है। उसने कहा : यह कौन सा फित्ना है ?! यह मात्र कुछ मीलों की वृद्धि हैं जिन्हें मैं बढ़ा रहा हूँ। उन्हों ने कहा : इससे बढ़कर और क्या फित्ना हो सकता है कि तू यह समझे कि तुझे एक ऐसी फज़ीलत की तरफ पहल हासिल हो गई है जिसे अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नहीं हासिल कर सके?! मैं ने अल्लाह का यह फरमान सुना है कि :

﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ [النور: ٦٣]

''सुनो! जो लोग पैग़म्बर के आदेश का विरोध करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि उन पर कोई भयंकर आफत न आ पड़े या उन्हें कष्ट दायक प्रकोप न घेर ले।'' (सूरतुन–नूर : 63)[1]

यदि आप अपनी नीयत को अल्लाह के लिए विशुद्ध कर लेंगे, अपने अमल को उसके लिए खालिस कर देंगे और अपने हज्ज के अंदर अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करेंगे, तो अल्लाह तआला इसे आपकी तरफ से क़बूल फरमाएगा; क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ﴾ [الملك: ٢]

''ताकि तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन सबसे अच्छा कार्य करने वाला है।''

हाफिज़ इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह ने फरमाया : ''अमल उस वक़्त तक अच्छा नहीं हो सकता जबतक कि वह अल्लाह सर्वशक्तिमन के लिए खालिस (विशुद्ध) और अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत के अनुसार न हो। जब भी अमल

[1] अल–एतिसाम (174) लेखक : शातिबी।

के अंदर इन दोनों शर्तों में से कोई एक शर्त नहीं पाया जाएगा, तो वह अमल नष्ट और व्यर्थ हो जाएगा।[1]

तथा फुज़ैल बिन अयाज़ ने अल्लाह तआला के कथन :

﴿ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ﴾ [الملك: ٢]

''ताकि तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन सबसे अच्छा कार्य करने वाला है।''

के बारे में फरमाया : ''सबसे खालिस और सबसे ठीक'' लोगों ने कहा : ऐ अबू अली! ''सबसे खालिस और सबसे ठीक'' का मतलब क्या है? तो उन्हों ने कहा : ''यदि अमल खालिस हो और ठीक न हो, तो उसे क़बूल नहीं किया जायेगा, और यदि वह ठीक हो और खालिस न हो, तब भी उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा, यहाँ तक कि वह खालिस और ठीक हो जाए। और खालिस होने का मतलब यह है कि वह केवल अल्लाह के लिए हो, और ठीक होने का मतलब यह है कि वह सुन्नत के अनुसार हो।''[2]

---

[1] तफसीरूल क़ुरआनिल अज़ीम (4/266).

[2] इक़्तिज़ाउस्सिरातिल मुस्तक़ीम 2/373.

नवाँ : हज्ज की यात्रा से अपनी शक्ति भर लाभ उठाने के इच्छुक बनें; चुनाँचे अच्छे लोगों के साथ उठना–बैठना रखें, बेकार लोगों के साथ उठने–बैठने से दूर रहें, अपने समय को दयालु अल्लाह की आज्ञाकारित और कुरआन की तिलावत, हिसाब लेने वाले बादशाह (अल्लाह) के ज़िक्र, भलाई का रास्ता दिखाने, बुराई से सावधन करने और इसी तरह के अन्य नेकी के कामों में बिताएं जिनके द्वारा दयालु अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होती है। अल्लाह की आज्ञा से आप गुनाहों और पापों से उस दिन की तरह पाक व साफ होकर वापस लौटें गे जिस दिन कि आपकी माँ ने आपको जना था।

हम अल्लाह तआला से अपने लिए और आपके लिए सत्यता और स्वीकृति का प्रश्न करते हैं ; निःसंदेह वह सबसे महान है जिससे आशा लगाई जा सकती है और सबसे दानशील है जिससे प्रश्न किए जाने के योग्या है, तथा अल्लाह तआला हमारे ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनकी संतान और उनके सभी साथियों पर दया और शांति अवतरित करे।